दिनांक: 10 ज़ुल-हिज्जा 1447 हिजरी, मुताबिक 27 मई 2026 ईस्वी

ईदुल-अज़हा का खुतबा

सारी तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं, हम उसी की तारीफ करते हैं, उसी से मदद मांगते हैं और उसी से माफी चाहते हैं। और हम अपने नफ्स की बुराइयों और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं। जिसे अल्लाह हिदायत दे दे, उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं, और जिसे वह (उसकी टेढ़ी चाल की वजह से) भटका दे, उसे कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और उसके रसूल हैं।

{يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ} [آل عمران: 102]

"हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरने का हक है, और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।" [सूरह आले-इमरान: 102]

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ

अल्लाह सबसे बड़ा है, जिसने अनगिनत और बेशुमार हिकमतों के तहत ईदों के ये पावन अवसर तय फरमाए। अल्लाह सबसे बड़ा है, जिसने हम पर अपने फज़्ल व करम तथा कृपा के ऐसे मौसमों की बारिश बरसाई जो हर ईद पर लौट-लौट कर आती और दिखाई देती है। अल्लाह सबसे बड़ा है, जितनी बार किसी हाजी ने एहराम बांधा और उमरा किया। अल्लाह सबसे बड़ा है, उस गिनती के बराबर जितनी बार किसी 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहने वाले ने कलिमा पढ़ा और 'अल्लाहू अकबर' कहा। अल्लाह सबसे बड़ा है, जितनी बार हाजी मैदान-ए-अरफात में ठहरे, और जितनी बार किसी कुर्बानी करने वाले ने अल्लाह के लिए कुर्बानी पेश की और जानवर ज़ब्ह किया।

ऐ अल्लाह के बंदो:

लो देखो! यह ईद का वह दिन है जिससे मोमिनों के दिल खुशहाल होते हैं और परहेजगारों की आँखें ठंडी होती हैं। यह कुर्बानी का दिन है, हज-ए-अकबर का दिन है, जो हज के दिनों में सबसे उत्तम और सबसे बड़ी भीड़ वाला दिन है। इसलिए मोमिन को चाहिए कि वह अल्लाह के उदार वादे, उसकी खूबसूरत कृपा, और उसकी विशाल दया व उदारता पर खूब खुशियाँ मनाए;

{ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ} [يونس: 58]

"कह दीजिए: यह अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत ही की वजह से है, इसलिए इस पर उन्हें खुश होना चाहिए, यह उस (धन-दौलत) से कहीं बेहतर है जिसे वे इकट्ठा करते हैं।" [सूरह यूनुस: 58]

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ.

आदरणीय भाइयो!

हज के सबसे बड़े उद्देश्यों और इसके पवित्र तौर-तरीकों का सबसे मुख्य लक्ष्य यह है कि: पूरी मज़बूती के साथ इस बात का एलान किया जाए कि सिर्फ अल्लाह ही इबादत के लायक़ है, और इंसान सच्चे दिल, मुहब्बत, डर, उम्मीद और भरोसे के साथ सिर्फ और सिर्फ उसी एक अल्लाह की इबादत करे।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम ﷺ के हज का नक्शा खींचते हुए फरमाया: "फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने तौहीद (एकेश्वरवाद) का तल्बिया पुकारा:

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ، لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالمُلْكَ، لَا شَرِيكَ لَكَ

"मैं हाजिर हूँ ऐ अल्लाह, मैं हाजिर हूँ, मैं हाजिर हूँ, तेरा कोई साझीदार नहीं, मैं हाजिर हूँ, बेशक सारी तारीफें, नेमतें और बादशाही तेरे ही लिए हैं, तेरा कोई साझीदार नहीं" (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।)

इसलिए आप अल्लाह ही को अपनी असली पूंजी, अपनी सच्ची पनाहगाह, अपना एकमात्र उद्देश्य और अपनी पुकार का मुख्य केंद्र बना लें। क्योंकि जो उसकी जात से दिल लगा लेता है, वह उसके लिए काफी हो जाता है; जो उस पर पूरा भरोसा करता है, वह उसकी हिफाज़त फ़रमाता है; और जो उसकी पनाह में आ जाता है, वह उसे संभाल लेता है और उसका मददगार व रखवाला बन जाता है।

{إِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ * وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ} [الأنعام: 17، 18]

" अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ पहुँचाए तो उसके सिवा उसे कोई दूर करने वाला नहीं, और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए तो वह हर चीज़ पर पूरी ताक़त रखता है। और वही अपने बंदों पर पूरी तरह हावी है, और वह बड़ी हिकमत वाला, सब चीज़ों की खबर रखने वाला है।" [सूरह अल-अनआम: 17, 18]

अपनी नमाज़, अपने रोज़े, अपने हज और अपनी कुर्बानी को सिर्फ अल्लाह के लिए पूरा करें। अपने दिलों में अल्लाह की महानता को बसाएं, अपने सारे मामले उसी को सौंप दें, और अपने दिलों को अल्लाह तआला के सिवा हर चीज़ से साफ़ कर लें; क्योंकि जो इंसानों (की असलियत) को पहचान लेता है, वह उन्हें उनके असली मर्तबे पर रखता है, और जो अल्लाह को पहचान लेता है, वह अपना सब कुछ उसी के लिए समर्पित कर लेता है।

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَلِلَّهِ الحَمْدُ.

मुसलमान भाइयों!

हज के बड़े-बड़े मकसदों और उसकी महान हिकमतों में से एक मुख्य हिकमत यह भी है कि: काफिरों और मुशरिकों की उनकी इबादतों, उनके त्योहारों और उनके रस्म-ओ-रिवाज में पूरी तरह से मुखालफत की जाए।

{وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولُهُ} [التوبة: 3]

"और अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से हज-ए-अकबर के दिन लोगों को आम ऐलान है कि अल्लाह मुशरिकों से बेज़ार है और उसका रसूल भी।" [सूरह अत-तौबा: 3]

ये हमारे नबी ﷺ हैं, जिन्होंने अपने हज में खास तौर पर मुशरिकों के तरीकों के उलट काम करने का इरादा किया। आप ﷺ अराफात में ठहरे, जबकि कुरैश वहाँ नहीं ठहरते थे बल्कि हरम का हिस्सा समझकर मुज़दलिफ़ा ही में रह जाते थे। और मुशरिक लोग मुज़दलिफ़ा से सूरज निकलने के बाद रवाना होते थे, तो आप ﷺ ने उनके खिलाफ किया और सूरज निकलने से पहले ही वहाँ से चल दिए। वे लोग वादी-ए-मुहस्सिर में ठहर कर अपने बाप-दादाओं की बड़ाई का बखान करते थे, तो नबी ﷺ ने उनकी मुखालफत की; जब आप वहाँ से गुज़रे तो अपनी रफ़्तार तेज़ कर दी और वहाँ बिल्कुल नहीं रुके।

क्या के बावजूद भी कोई मुसलमान काफिरों और मुशरिकों जैसी समानता यानी उनके जैसा तौर-तरीका अपनाएगा?! जबकि रसूलुल्लाह ﷺ का फरमान है:

مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ

"जिसने किसी कौम जैसी समानता (नकल) अपनाई, वह उन्हीं में से माना जाएगा" [इस हदीस को अबू दाऊद ने रिवायत किया है, इसके रावी इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं, और अल्लामा अलबानी ने इसे सही क़रार दिया है]।

बल्कि अल्लाह और आखिरत के दिन पर यकीन रखने वाले का फर्ज तो यह है कि वह अपने दीन पर गर्व करे, उसकी निशानियों को मजबूती से थामे रखे, और अपने रब के सामने अपनी बंदगी का खुलकर प्रदर्शन करे।

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَلِلَّهِ الحَمْدُ.

ऐ मुसलमानो!

चूंकि अल्लाह तआला ने मोमिनों के दिलों में काबा को देखने की तड़प, वहाँ हाजिरी देने का शौक और उसकी पावन जगहों पर ठहरने की इच्छा पैदा कर दी है, लेकिन हर इंसान के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह हर साल हज कर सके, इसलिए अल्लाह ने इस मुबारक ज़माने में ऐसे काम तय कर दिए हैं जिनमें हज करने वाले और हज न करने

वाले, सब बराबर के शरीक हो सकते हैं; यानी ज़्यादा से ज़्यादा ला-इलाहा इल्लल्लाह, अल्लाहू अकबर और अल्हम्दु-लिल्लाह से अपनी ज़ुबान को तर रखना।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया:

مَا مِنْ أَيَّامٍ أَعْظَمُ عِنْدَ اللَّهِ، وَلَا أَحَبُّ إِلَيْهِ مِنَ الْعَمَلِ فِيهِنَّ مِنْ هَذِهِ الْأَيَّامِ الْعَشْرِ، فَأَكْثِرُوا فِيهِنَّ مِنَ التَّهْلِيلِ، وَالتَّكْبِيرِ، وَالتَّحْمِيدِ

"अल्लाह के नज़दीक इन दस दिनों (ज़ुल-हिज्जा के शुरुआती 10 दिन) से बढ़कर महानता वाले और कोई दिन नहीं हैं, और उसे सबसे ज़्यादा पसंदीदा अमल इन दिनों के अलावा किसी और दिन में नहीं है। इसलिए तुम इन दिनों में ज़्यादा से ज़्यादा से तहलील (लाइलाहा इल्लल्लाह), तकबीर (अल्लाहु अकबर) तहमीद (अल-हम्दु लिल्लाह) कहा करो" [इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है, और इसे अहमद शाकिर ने सही क़रार दिया है]।

और हाजी व गैर-हाजी दोनों ही के लिए कुर्बानी के जानवरों का खून बहाना तय किया गया है, ताकि अल्लाह की नज़दीकी और उसकी बड़ाई हासिल हो, और इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तरीके की पैरवी हो सके जो अल्लाह के लिए बिल्कुल समर्पित व एकतरफ़ा थे। अल्लाह तआला का फरमान है:

{ذَٰلِكَ وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ} [الحج: 32]

"यह है असल बात, और जो कोई अल्लाह की निशानियों का आदर करता है, तो बेशक यह दिलों की परहेज़गारी की वजह से है।" [सूरह अल-हज: 32]

इसलिए मुसलमान के लिए बेहतर तरीका यही है कि वह अपनी तरफ से और अपने परिवार की तरफ से कुर्बानी करे, और शरियत के तय समय के अंदर ही जानवर ज़ब्ह करे; क्योंकि ईद की नमाज़ से पहले कुर्बानी करना जायज़ नहीं है। और कुर्बानी का समय अय्याम-ए-तशरीक के तीसरे दिन यानी 13 ज़ुल-हिज्जा के सूरज डूबने के साथ खत्म हो जाता है। इसलिए जिसने अभी तक कुर्बानी का जानवर नहीं खरीदा और पक्का इरादा नहीं किया, वह जल्दी करे; क्योंकि समय में अभी गुंजाइश बाकी है।

अल्लाह तआला का फरमान है:

{لَنْ يَنَالَ اللَّهَ لُحُومُهَا وَلَا دِمَاؤُهَا وَلَكِنْ يَنَالُهُ التَّقْوَى مِنْكُمْ} [الحج: 37]

"अल्लाह को न तो उनका गोश्त पहुँचता है और न उनका खून, बल्कि उसे तो तुम्हारी तरफ से दिल का तक़्वा पहुँचता है।" [सूरह अल-हज: 37]

और सुन्नत यह है कि: क़ुर्बानी के गोश्त में से खुद भी खाए, रिश्तेदारों और दोस्तों को तोहफा भी दे, और ग़रीबों को सदक़ा भी करे; क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है:

{فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ} [الحج: 36]

"तो तुम उसमें से खुद भी खाओ और संतोष से बैठने वाले (ज़रूरतमंदों) को भी खिलाओ और मांगने वाले को भी। इसी तरह हमने उन जानवरों को तुम्हारे वश में कर दिया है ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो।" [सूरह अल-हज: 36]

अल्लाह तआला मेरे और आपके लिए इस महान कुरआन को बरकत वाला बनाए, और मुझे और आपको इन आयतों और हिकमत से भरी नसीहतों से फायदा पहुँचाए। मैं अपनी यह बात कहता हूँ और अल्लाह से अपने लिए और आप सबके लिए हर गुनाह की माफ़ी मांगता हूँ और उसी के सामने तौबा करता हूँ। इसलिए आप भी उसी से माफ़ी मांगें, बेशक वह बहुत माफ़ करने वाला, निहायत दयालु है।

दूसरा खुतबा

सारी तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे जहानों का पालने वाला है, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और उसके रसूल हैं। अल्लाह तआला उन पर, उनके परिवार पर और उनके सभी सहाबा पर अपनी रहमतें और सलामती नाज़िल फरमाए।

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ.

मुसलमान भाइयो!

अपनी ईद को तकबीर और तहलील, यानी 'अल्लाहु अकबर' और 'ला इलाहा इल्लल्लाह' से सजाएं, और अपनी ज़ुबानों को तस्बीह और तहमीद, यानी 'सुब्हानल्लाह' और 'अल्हम्दु-लिल्लाह' से तर रखें;

{وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ} [الأنفال: 45]

"और अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा याद करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ।" [सूरह अल-अनफ़ाल: 45]

और हज़रत नुबैशा हुज़ली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

«أَيَّامُ التَّشْرِيقِ أَيَّامُ أَكْلٍ وَشُرْبٍ وَذِكْرٍ لِلَّهِ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ]

"अय्याम-ए-तशरीक (ईद के बाद के तीन दिन) खाने, पीने और अल्लाह को याद करने के दिन हैं।" [इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है]

अपने और अपने बाल-बच्चों के दिलों में खुशी लाएं, और ईद के मौके पर अपनी इस खुशी को अल्लाह की परहेजगारी और उसके डर के साथ जोड़े रखें, और अपना माल उन चीज़ों में बिल्कुल भी खर्च न करें जिन्हें अल्लाह ने हराम किया है।

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

«يَوْمُ عَرَفَةَ، وَيَوْمُ النَّحْرِ، وَأَيَّامُ التَّشْرِيقِ، عِيدُنَا أَهْلَ الإِسْلَامِ» [رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ]

"अरफ़ात का दिन, क़ुर्बानी का दिन (ईद का पहला दिन) और अय्याम-ए-तशरीक, हम इस्लाम वालों की ईद के दिन हैं।" [इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है]

इसी वजह से अल्लाह तआला ने ज़ुल-हिज्जा की ग्यारहवीं, बारहवीं और तेरहवीं तारीख का रोज़ा रखना हराम ठहराया है, सिवाय उन हाजियों के जिन्हें क़ुर्बानी का जानवर ज़ब्ह करने की ताक़त न हो।

इस ईद के मौके पर अपनी खुशी और उल्लास का खुलकर इज़हार करें, इस दिन बीते हुए वक़्त के दुखों और गमों को दोबारा ताज़ा न करें। इस दिन रश्तेदारों से अच्छा बर्ताव

करें, आपसी मतभेदों को मोहब्बत और नज़दीकी में बदल दें। अपने झगड़े ख़त्म करें, अपनी बिखरी हुई एकता इकट्ठा करें, दिलों के कीने, जलन और नफ़रत को जड़ से उखाड़ फेंकें, पुरानी दुश्मनियाँ भुला दें, एक-दूसरे को माफ़ करें, एक-दूसरे पर रहम खाएं, भाई-भाई बन जाएं, आपस में मेल-मिलाप व मोहब्बत पैदा करें और गुटबाज़ी में न पड़ें;

{وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ} [الأنفال: 46]

"और अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो और आपस में मत झगड़ो, वरना तुम बुज़दिल (कमज़ोर) हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी (तुम्हारी साख खत्म हो जाएगी) और सब्र करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।" [सूरह अल-अनफ़ाल: 46]

मुसलमान बहनों!

आपकी असली सुंदरता परहेजगारी और हया है, और आपका असली गहना शर्म व हशमत और पाकदामनी है। बनावटी रूप-रंग और झूठी सज-धज से खुद को दूर रखें; अल्लाह तआला का फरमान है:

{ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَهُنَّ } [النور: 60]

"और अगर वे पाकदामनी अख्तियार किए रहें, तो यह उनके हक में कहीं बेहतर है।" [सूरह अन-नूर: 60]

मोमिन महिलाओं के अच्छे व्यवहार, नेक औरतों के लिबास और पवित्र महिलाओं के गहने (हया) को मज़बूती से अपनाएं;

{وَلِبَاسُ التَّقْوَى ذَلِكَ خَيْرٌ ذَلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ } [الأعراف: 26]

"और तक़्वे (परहेजगारी) का लिबास, वह सबसे उत्तम है। यह अल्लाह की निशानियों में से है ताकि वे नसीहत हासिल करें।" [सूरह अल-अराफ़: 26]

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ، وَلِلَّهِ الحَمْدُ.

प्यारे भाइयो!

चाव और उत्साह से कुर्बानी कीजिए, अल्लाह तआला आपकी कुर्बानियाँ कुबूल फरमाए! अपने पैदा करने वाले और मालिक के हुज़ूर उनका खून बहाइए और पूरे खुले दिल और खुशदिली के साथ यह महान कर्तव्य अंजाम दीजिए। अल्लाह तआला हमारे और आपके नेक आमाल कुबूल फरमाए। आप सबको ईद बहुत-बहुत मुबारक हो! अल्लाह तआला आपकी कोशिशें कुबूल फरमाए, आपके गुनाहों को माफ़ करे, और आपकी इस ईद को असीम खुशी, उल्लास और सुख-शांति का ज़रिया बना दे।

ऐ अल्लाह! रहमतें और सलामती नाज़िल फरमा सबसे रौशन चेहरे और सबसे चमकदार पेशानी वाले हमारे नबी मुहम्मद ﷺ पर। ऐ अल्लाह! हमारे लिए ईमान को पसंदीदा बना दे और उसे हमारे दिलों में संवार दे, और हमारे लिए कुफ्र, गुनाह और नाफ़रमानी को नापसंद ठहरा दे, हमें हिदायत पर चलने वालों में शामिल फरमा। ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों को इज़्ज़त व सरबुलंदी अता फरमा, और शिर्क व मुशरिकों को कमज़ोर व नीचा कर दे, और अपने दीन की, अपनी किताब की, अपने नबी की सुन्नत की और अपने मोमिन बंदों की भरपूर मदद फरमा। ऐ अल्लाह! तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को माफ़ फरमा, और सभी मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को बख्श दे, चाहे वे ज़िंदा हों या वफ़ात पा चुके हों। और अपने सम्मानित घर काबा के हाजियों की हर तरह की बुराई और अप्रिय बातों से हिफ़ाज़त फरमा, और उन्हें सलामती के साथ, ढेर सारा अज्र व सवाब बटोरते हुए उनके घरों की तरफ वापस लौटा, इस हाल में कि तू उनके गुनाहों को माफ़ कर चुका हो और उनके दिलों को तसल्ली दे चुका हो। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके वली-अहद (उत्तराधिकारी) को अपनी हिदायत के मुताबिक काम करने की तौफीक अता फरमा, और उन दोनों के कामों को अपनी इबादत और रज़ा के दायरे में रख। और इस मुल्क को अमन व चैन का पालना, दानी, खुशहाल और शांति व ईमान का घर बना दे, और मुसलमानों के बाकी सभी देशों को भी इसी तरह अमन व अमान से मालामाल फरमा दे।

खुतबात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटी